भट्टारक यश:कीर्ति

जीवन-परिचय : भट्टारक यश:कीर्ति भट्टारक गुणकीर्ति के लघुभ्राता और उनके पट्टधर थे। ये उस समय के सुयोग्य विद्वान और प्रतिष्ठाचार्य थे। संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश भाषा के ज्ञाता, कवि और प्रभावशाली भट्टारक थे।

भट्टारक यश:कीर्ति का समय 15वीं शताब्दी सुनिश्चित है, क्योंकि इन्होंने हरिवंशपुराण की रचना संवत् 1500 में की है।

रचनाएँ : भट्टारक यश:कीर्ति की चार रचनाएँ उपलब्ध हैं—

1. पांडवपुराण : अपभ्रंश भाषा में लिखित इस ग्रन्थ में 34 सन्धियाँ हैं, जिनमें श्रीकृष्ण का चरित भी अंकित है। साथ ही नेमिनाथ, युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन की तपश्चर्या तथा निर्वाण-प्राप्ति, नकुल, सहदेव का सर्वार्थसिद्धि प्राप्त करना और बलदेव का स्वर्ग जाने का वर्णन है। कवि ने पांडवपुराण की रचना नवग्राम नामक नगर, जो दिल्ली के निकट था, वहाँ पर शाह हेमराज के अनुरोध से की थी।

2. हरिवंशपुराण : यह ग्रन्थ भी अपभ्रंश भाषा में लिखित है, इसमें 13 सन्धियाँ और 267 कडवक हैं। इस ग्रन्थ में हरिवंश की कथा वर्णित है।

3. जिनरात्रि कथा : इस लघुकाय काव्य में भगवान महावीर की निर्वाणप्राप्ति कार्तिक-कृष्णा चतुर्दशी की रात्रि का काव्यात्मक वर्णन है। भगवान महावीर के आचरण का पालन ही कवि की रचना का मुख्य उद्देश्य है।

4. रविव्रतकथा : इसमें रविव्रत की कथा अंकित है। छोटी-सी यह रचना भी बहुत महत्त्वपूर्ण है।